मन की डोर | by Dheerendra Gupta Dheer

मन की डोर से तुझे बाँध लूँगा सांवरे
प्रीत का कसके शिकंजा थाम लूँगा सांवरे
मन की डोर से .....

प्रीत का खंजर चलाकर काट डाला ये जिगर
हो गया मदहोश इतना भूल बैठा हर डगर
अब जरा बचकर दिखाओ, मान लूँगा सांवरे
मन की डोर से .....

नज़रो ही नज़रों में सारी बात मैं कर जाऊँगा
पहले कर लूँ तुमसे बातें, लौट फिर घर जाऊँगा
क्या लिखा नज़रों में तेरी जान लूँगा सांवरे
मन की डोर से .....

चोर हो दिलचस्प कान्हा, दिल चुराकर ले गए
मेरा ये बेचैन दिल अपना बनाकर ले गए
अब चुरा ना पाओगे पहचान लूँगा सांवरे
मन की डोर से .....

आरज़ू बस धीर की नज़रें ज़रा दो चार हो
प्रेम के वशीभूत या फिर सांवरे तक़रार हो
बच ना पाओगे यूँ मुझसे थाम लूँगा सांवरे
मन की डोर से .....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%a1%e0%a5%8b%e0%a4%b0-by-dheerendra-gupta-dheer/